30/8/66 ओम

ओम शान्ति। मनुष्य को देवता अर्थात् भ्रष्टाचारी से श्रेष्टाचारी बनाने लिए बाप ही आते हैं। भारत के लिए ही समझाना है। आजकल गवर्मेन्ट भी कहती कि मनुष्य भ्रष्टाचारी बन गए हैं। तो ज़रूर गवर्मेन्ट भी भ्रष्ठाचारी ठहरी। यथा गवर्मेन्ट तथा प्रजा। यह भी उनको समझाना पड़े। अब कहते हैं, भ्रष्टाचारी हैं, तो ज़रूर कोई समय भारतवासी भ्रष्टाचारी(श्रेष्ठाचारी) थे। तो भ्रष्टाचारी बने हैं। भारत श्रेष्टाचारी था जिसको सतयुग कहेंगे। आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। अब भारत भ्रष्टाचारी, पतित है। इसलिए श्रेष्टाचारी बनाने लिए चिलाते हैं। ज़रूर कोई समय भारत श्रेष्टाचारी था। मनुष्यों को तो पता नहीं पड़ता। तुम ब्रह्माकुमारियाँ कहती हो हम भ्रष्टाचारी भारत को 10 वर्ष में श्रेष्टाचारी बनावेंगी। तो तुमको यह समझाना पड़े ना। भारत श्रेष्टाचारी था। अब भ्रष्टाचारी बना है। हम फिर श्रेष्टाचारी बनाते हैं। श्रेष्टाचारी अक्षर तो है ना। कहते भी हैं भ्रष्टाचार से श्रेष्टाचार बने। ऐसे नहीं कहते कि भ्रष्टाचारी दुनिया ही खतम हो जाए। अक्षर भी पकड़ने होते हैं। बाप समझाते हैं जब कोई तुम्हारे पास आते हैं तो बोलो, गवर्मेन्ट कहती है कि भ्रष्टाचारी मनुष्य बहुत हैं, कोई उन्हों को श्रेष्टाचारी बनावे। जैसे समझते हैं साधु समाज श्रेष्टाचारी है; परन्तु श्रेष्टाचारी तो थे ही सतयुग में। आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। उन्हों की महिमा भी गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न... सतयुग में ज़रूर श्रेष्टाचारी ही होंगे। अब तो है कलियुग; इसलिए भ्रष्टाचारी हैं। भारत श्रेष्टाचारी से भ्रष्टाचारी फिर भ्रष्टाचारी से श्रेष्टाचारी कैसे बनता है, आओ तो आपको समझावें। आज से 5000 वर्ष पहले एक आदि सनातन दैवी धर्म था। उनको ही स्वर्ग कहा जाता है। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं ना। सुनते हुए भी जैसे अनसुना कर देते हैं। अब तुम बाप से सही बातें सुन कर धारण करती हो। वो तो धारणा नहीं करते; क्योंकि बुद्धि को ताला लगा हुआ है। उनको कैसे समझाया जाए इसके लिए विचार–सागर–मंथन कर रोज़ प्वाइंट्स निकालनी चाहिए। पहले तो सिद्ध कर बताना है कि भ्रष्टाचारी है। गवर्मेन्ट खुद कहती है हमारी प्रजा भ्रष्टाचारी है। तो गवर्मेन्ट खुद भी भ्रष्टाचारी ठहरी ना। यथा श्रेष्टाचारी राजा–रानी तथा प्रजा। ऐसे–2 विचार–सागर–मंथन करने की आदत (डाले) तो तुम्हारे बहुत विचार चलेंगे। (ऐसे) नहीं, सुना, खाया–पिया–सोया खलास। सर्विस में जाना होता है तो यह समझाना होता है इस समय कलियुग है। सतयुग पावन दुनिया, कलियुग पतित दुनिया। यह तो कोई भी मानेंगे। पतित को भ्रष्टाचारी कहेंगे। पावन को श्रेष्टाचारी कहेंगे। साधु–समाज जिनको श्रेष्टाचारी समझती है; परन्तु वो खुद ही गाते हैं हे पतित–पावन आओ। अब है ही कलियुग। पतित दुनिया, तमोप्रधान दुनिया। जो श्रेष्टाचारी थे वो भ्रष्टाचारी बने हैं। सीढ़ी उतरे हैं। सतोप्रधान को ही फिर तमोप्रधान बनना है। गायन भी है ना आपे ही पूज्य सतोप्रधान, आपे ही पुजारी तमोप्रधान। इस समय सृष्टि ही भ्रष्टाचारी है। अक्षर देना पड़ता है। सतयुग पावन श्रेष्टाचारी, कलियुग पतित भ्रष्टाचारी। भारतवासियों के लिए ही कहेंगे। बुद्धि से मंथन करना चाहिए हरेक को। ऐसे नहीं कि एक को ही सिर्फ मंथन करना होता है। अक्षर पक्के कर देने चाहिए। गवर्मेन्ट खुद कहती है यह भ्रष्टाचारी है। भारत श्रेष्टाचारी था। चित्र भी तुम्हारे पास हैं। सीढ़ी बड़ी अच्छी है। सतयुग में पावन सतोप्रधान पावन श्रेष्टाचारी देवी–देवताएँ थे। अब हैं तमोप्रधान। इस समय राजा–रानी तो हैं नहीं। अब भी हैं; परन्तु राजा–रानी का लकब नहीं है। तो कहेंगे यथा प्रसिडेंट... इसमें कोई गवर्मेन्ट की इन्सल्ट वा बदनामी नहीं करते हैं। यह तो समझानी है। तुमने लिखा भी है 10 वर्ष अन्दर हम ब्रह्माकुमारियाँ भारत को ऐसा बनावेंगी। आज से 5000 वर्ष पहले पावन श्रेष्टाचारी सतयुग भारत था। आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। दुख का नाम नहीं था। सतोप्रधान अक्षर भी ज़रूर लिखना है। अच्छा कायदेसिर सब लिखना चाहिए। अब पतित तमोप्रधान भ्रष्टाचारी हैं। फिर से सतोप्रधान कैसे बनता है सो आकर समझो। चित्र तो क्लीयर है। भगवानुवाच्य। तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है। फिर सतोप्रधान बनाना है। आत्मा जो सुन्दर थी सो श्याम बनी है। फिर सुन्दर कैसे बने? हम कैसे श्रीमत पर बन रहे हैं आपको भी समझाते हैं। भगवानुवाच्य अपन को आत्मा समझ माम् एकम् याद करो। यह है ही प्राचीन राजयोग। तो बाप के सिवाय और कोई सिखा ना सके। कोई भी आवे तो समझाना है हम

(अधूरी मुरली)